Topic.- DIFFERENT PATTERNS OF SOCIAL CHANGE

(सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न प्रतिमान)

Sol- सभी समाजों में तथा सभी समय में सामाजिक परिवर्तन एक सा नही होता, इसलिए सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न रूप या प्रतिमान हमे देखने को मिलते है। मैकाइवर तथा पेज ने सामाजिक परिवर्तन के निम्नलिखित तीन प्रमुख प्रतिमानों का उल्लेख किया गया है —

प्रथम प्रतिमान — वह सामाजिक परिवर्तन वह स्वरूप है जो एक सिलसिले से क्रम-विकास की ओर एक ही दिशा मे निरंतर बढ़ता जाता है, चाहे ऐसे परिवर्तन का प्रारंभ एकाएक ही क्यों न हो। उदाहरणार्थ एक नवीन आविष्कार समाज मे न केवल एकाएक परिवर्तन लाता है अपितु अनेक आगामी परिवर्तन का एक सिलसिला भी उत्पन्न करता है क्योंकि उस आविष्कार में जैसे-जैसे सुधार होता जाता है, वैसे-वैसे परिवर्तन का सिलसिला लगातार आगे बढ़ता जाता है। टेलीफोन, भाप से चलने वाले इंजन, रेडियो, छापने की मशीन आदि सभी चीजों के आविष्कार के बाद परिवर्तन का जो सिलसिला चला है, उससे हम सब परिचित ही है। चूंकि सामाजिक परिवर्तन के इस प्रतिमान के अन्तर्गत परिवर्तनों को रेखीय परिवर्तन कहते है। उदाहरणार्थ यातायात के साधनों में रेखीय परिवर्तन पहियों के आविष्कार के बाद देखने को मिलता है, जबकि परिवर्तन निरंतर एक ही दिशा में आगे की ओर होता गया है, जैसे - पहले बैलगाड़ी, फिर इक्का-तांगा, फिर साइकिल, उसके पश्चात रेलगाड़ी फिर हवाई जहाज इत्यादि।

द्वितीय प्रतिमान — सामाजिक परिवर्तन के इस प्रतिमान के अन्तर्गत परिवर्तन की प्रवृति लगातार एक ही

दिशा में आगे बढ़ने के बजाए ऊपर-नीचे की होती है।
इसका तात्पर्य यही है कि कुछ समय तक परिवर्तन ह्रास अथवा प्रगति की ओर बढ़ने के बाद उसकी दिशा विपरीत की ओर मुड़ जाती है इस प्रकार के प्रतिमान में परिवर्तन की दिशा ऊपर से नीचे की ओर फिर नीचे से ऊपर की ओर होती है। इस कारण इसे उतार-चढ़ावदार परिवर्तन कहते हैं जैसे- जनसंख्या के क्षेत्र में हम इस प्रकार के उतार-चढ़ावदार परिवर्तन को देख सकते हैं। भारत में पहले जनसंख्या में परिवर्तन लगातार वृद्धि की ओर रहा। फिर परिवार नियोजन आदि कार्यक्रमों के फलस्वरूप परिवर्तन एक विपरीत दिशा में मुड़ गया है। इसी प्रकार सांस्कृतिक क्षेत्र में पहले भारतवासी आध्यात्मवाद की ओर निरंतर आगे बढ़ते गए, पर बाद में ह्रास की ओर नीचे उतरने लगे और अब आध्यात्मवाद के विपरीत भौतिकवाद की ओर तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। पहले सामाजिक मूल्य त्याग की ओर उन्मुख था। अब भोग की ओर बढ़ रहा है। परिवर्तन के इस प्रतिमान में यह निश्चित नहीं रहता कि परिवर्तन की दिशा कब किस ओर मुड़ जाएगी।

तृतीय प्रतिमान — तीसरे प्रकार के प्रतिमान को तरंगीय परिवर्तन कहा गया है। इसकी प्रकृति भी दूसरे प्रतिमान से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। अन्तर केवल इतना है कि उतार-चढ़ावदार परिवर्तन में परिवर्तन की दिशा एक सीमा के बाद विपरीत दिशा की ओर मुड़ जाती है और इस विपरीत रूप को निश्चित रूप से देखा जा सकता है परन्तु तरंगीय परिवर्तन में लहरों की भाँति एक के बाद दूसरा परिवर्तन आता है और यह कहना कठिन हो जाता है कि दूसरी लहर प्रथम लहर के विपरीत है अथवा दूसरा परिवर्तन प्रथम के सन्दर्भ में ह्रास या प्रगति का सूचक है। उदाहरणार्थ, "फैशन की दुनिया में नए-नए फैशनों की तरंग या लहर आती रहती है और प्रत्येक के बाद कुछ नया परिवर्तन हो जाता है। इसमें पतन या प्रगति का कोई प्रश्न नहीं होता।

समाप्त